24 से 31 अगस्त, 2024 तक कपास की खेती के लिए सुझाव

कपास/बी.टी. की फसल में अगस्त माह के दूसरे पखवाड़े में जहाँ बारिश हुई है वहाँ गुलाबी सुंडी की संख्या पहले से कम है। परन्तु आगे इसके संक्रमण के बढ़ने की संभावना है। इसलिए प्रतिदिन फसल की निगरानी अवश्य करें।

इस समय कपास में टिंडे बनने की अवस्था चल रही है मुख्यतः रेतीले इलाकों में टिंडो की वजह से पोषक तत्वों की आवश्यकता अधिक रहेगी। अतः किसान भाई आने वाले एक महीने तक नीचे बताई गई सिफारिशों को अपनाकर कपास का उत्पादन अधिक लें सकते है।

सस्य क्रियाएँ

- बी.टी. कपास की अधिकतम उत्पादान के लिए बौकी, फूल एवं टिंडे बनने की अवस्था पर सिंचाई या बारिश से पूर्व एवं बाद (12 घंटे के भीतर) NAA की 25 मि.ली. और कोबाल्ट क्लोराइड की एक ग्राम मात्रा को 100 लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करें।
- कपास की फसल यदि 100 दिन से ऊपर की हो गई है तो **13:0:45** दो पैकेट प्रति एकड़ के हिसाब से 2 छिड़काव 10 – 15 दिन के अंतराल पर जरूर करें। अगर फसल 100 दिन से कम है तो आप जिंक और यूरिया का छिड़काव भी कर सकते हैं। 2.5 % यूरिया व् 0.3 % जिंक (33 प्रतिशत वाला) का घोल बनाकर स्प्रे करें।
- ड्रिप विधि के द्वारा लगाई गई कपास में हर सप्ताह ड्रिप के द्वारा घुलनशील खाद; जिसमें दो पैकेट 12:61:0 के, तीन पैकेट 13:0:45 के, 6 किलो यूरिया व 100 ग्राम जिंक प्रति एकड़ के हिसाब से 10 हफ्तों तक अवश्य डालें।
- रेतीली मिट्टी में मैग्नीशियम की कमी के लक्षण हैं तो आधा परसेंट मैग्नीशियम सल्फेट का छिड़काव भी अवश्य करें।
- नरमा में आवश्यकता एवं फसल की अवस्था के अनुसार सिंचाई करें तथा अधिक बरसात के बाद पानी निकासी का प्रबंध अवश्य करें अन्यथा कपास की फसल पर बुरा प्रभाव पड़ेगा।

कीट प्रबंधन

- **अगस्त का महीना गुलाबी सुंडी के नियंत्रण हेतु महत्वपूर्ण है अतः गुलाबी सुंडी का निरिक्षण नरमा की फसल में अवशय करें।**
- गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए 2 फेरोमोन ट्रैप प्रति एकड़ लगाएं तथा इनमें फसने वाले गुलाबी सुंडी के पतंगों की गिनती 3 दिनों के अंतराल पर करें। मध्य अगस्त से यदि इनमें कुल 24 पतंगे प्रति ट्रैप तीन रातों में आते हैं तो कीटनाशक के छिड़काव की आवश्यकता हैं।
- **अपनी फसल में 100 फूलों का निरिक्षण करें इसमें से यदि 5–10 फूल गुलाबी सुंडी से ग्रसित मिलते हैं या 20** (15 दिन पुराने) **टिन्डो को फाड़कर देखने पर 1–2 टिन्डो में जीवित गुलाबी सुंडी मिलती हैं तो कीटनाशक के छिड़काव की आवश्यकता हैं।**
- नरमा की फसल में गुलाबी सुंडी का प्रकोप फलीय भागों पर 5–10 प्रतिशत होने पर एक छिड़काव प्रोफेनोफोस (क्यूराक्रोन/सेल्क्रोन/कैरिना) 50 ई सी की 3 - 4 मिलीलीटर मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से करें। इसके बाद अगला छिड़काव जरुरत पड़ने पर क्यूनालफास 20 ए.एफ./25 ई सी की 4 - 5 मिलीलीटर या थिओडिकार्ब (लार्विन) 75 डब्लू. पी. की 1.5 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से 7–10 दिनों बाद करें। एक ही कीटनाशक का प्रयोग बार बार न करें।
- **देसी कपास में इस माह चित्तीदार सुंडी का प्रकोप होता हैं, अतः अपनी फसल की निगरानी रखें। चित्तीदार सुंडी का फलीय भागों पर 5 प्रतिशत प्रकोप मिलने पर एक छिड़काव 75 मिलीलीटर स्पाइनोसैड (ट्रैसर) 45 एस सी को 150–175 लीटर पानी प्रति एकड़ की दर से करें।**

- गुलाबी सुंडी के लिए मिश्रित कीटनाशक उत्पादों जिसमे सिंथेटिक पयरीथ्रोइड जैसे साइपरमेथ्रिन, डेल्टामेथ्रिन, अल्फामेथ्रिन, फैनवलरेट इत्यादि एवं अन्य कीटनाशक जैसे एसीटामिप्रिड, ऐसीफेट का प्रयोग इस माह नरमा फसल में न करें।
- **अगस्त माह में नरमा की फसल में सफेद मक्खी वं हरे तेला का भी प्रकोप होता हैं इसलिए इनकी निगरानी सप्ताह में दो बार करें।** इसके लिए एक एकड़ से 20 पौधों की तीन पत्तियों (एक ऊपर, एक बीच एवं एक नीचे की) पर सफेद मक्खी के व्यस्क एवं हरे तेला के शिशु (निम्फ) की गिनती करके प्रति पत्ता औसत निकल लें। सफेद मक्खी यदि 6–8 प्रौढ़ प्रत्ति पत्ता एवं हरा तेला 2 शिशु प्रति पत्ता मिलते हैं तो फ्लॉनिकामिड़ (उलाला) 50 डब्लू जी की 60 ग्राम या एफिडोपाईरोपेन (सैफीना) 50 जी/एल की 400 मिली मात्रा प्रति 200 लीटर पानी की दर से एक छिड़काव करें।
- सफेद मक्खी का ज्यादा प्रकोप होने पर इसके प्रबंधन के लिए पाईरीप्रोक्सिफेन (डायटा) 10 ई सी की 400 मिलीलीटर मात्रा प्रति 200 लीटर पानी की दर से छिड़काव करें तथा आवश्यकता पड़ने पर दूसरा छिड़काव 12 - 15 दिनों के बाद स्पिरोमेसिफेन (ओबेरॉन) 240 एस. सी. की 240 मिलीलीटर मात्रा प्रति 200 लीटर पानी प्रति एकड़ की दर से करें।
- बरसात के मौसम में स्प्रे के घोल में चिपचिपा पदार्थ जैसे सेण्डवित, सेलवेट 99 या टीपोल की 60–80 मिलीलीटर/ग्राम मात्रा प्रति 200 लीटर घोल मिलाएं।
- नरमा की फसल में ज्यादा जहरीले कीटनाशकों या कीटनाशकों के मिश्रण का प्रयोग ना करे ऐसा करने से मित्र कीटों की संख्या कम हो जाती है तथा रस चूसने वाले कीड़ों की समस्या बढ़ने लगती है।

रोग प्रबंधन

- पत्ती मरोड़ रोग के कारण नसे मोटी, पत्तियों का ऊपर की ओर मुड़ना व पौधे छोटे रह जाते हैं। यह रोग विषाणु द्वारा फैलता है। सफेद मक्खी इस रोग को फैलाने में सहायक है। सफेद मक्खी का पूर्ण रूप से नियंत्रण करें ।
- टिंडा गलन रोग पर नियंत्रण के लिए सुंडी नियंत्रण वाली सिफारिश की गयी दवाई के साथ कॉपर ऑक्सिक्लोराइड या बाविस्टिन 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के साथ मिलाकर छिड़काव करें ।
- जीवाणु अंगमारी रोग के लिए किसान भाई 6 से 8 ग्राम स्ट्रेप्टोसाईक्लीन और 600 से 800 ग्राम कॉपर ऑक्सिक्लोराइड को 150 से 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ 15 से 20 दिन के अंतराल पर दो से तीन छिड़काव करें।
- पैराविल्ट के लिए किसान भाई लक्षण दिखाई देते ही 24 से 48 घंटों के अंदर 2 ग्राम कोबाल्ट क्लोराइड 200 लीटर पानी में घोल बनाकर 24 से 48 घंटे में खेत में छिड़काव करें परंतु पौधे सूख जाने दवा का असर नहीं होगा ।
- जड़ गलन बीमारी से सूखे हुए पौधों को खेत में से उखाड़ कर जमीन में दबा दें, ताकि बीमारियों को आगे बढ़ने से रोका जा सके।
- इस रोग से प्रभावित पौधों के आसपास स्वस्थ पौधों में 1 मीटर तक कार्बेंडाजिम 2 ग्राम प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर 100 – 200 मिलीलीटर प्रति पौधा जड़ों में डालें । जड़ गलन रोग के लिए दवाई डालते समय किसान भाई पीठ वाले स्प्रे पंप का प्रयोग करते समय मोटे फव्वारे का प्रयोग करके जड़ों के पास इस फफूंदनाशक घोल को डालें।

अन्य सलाह

- हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि मौसम विभाग द्वारा समय समय पर जारी मौसम पूर्वानुमान को ध्यान में रखकर ही कीटनाशकों एवं फफूंदनाशकों का प्रयोग करें।

हरा तेला के लक्षण (किनारों से पीलापन एवं नीचे की तरफ मुड़ना)	सफ़ेद मक्खी के लक्षण (पत्तों पर चिपचिपा तेलीय स्राव)
गुलाबी सुंडी के लक्षण (फिरकीनुमा फूल)	गुलाबी सुंडी के लक्षण (क्षतिग्रस्त फूल)
गुलाबी सुंडी के लक्षण (क्षतिग्रस्त टिंडा)	गुलाबी सुंडी के लक्षण (टिंडों में निकास छिद्र)

1. कपास में मैरोडिया रोग के लक्षण (इस रोग में पत्तों की नसें फूल जाती है व पत्ते मुड़ जाते हैं)	2. कपास में मैरोडिया रोग के लक्षण (इस रोग की गंभीर अवस्था में पत्ती के नीचे एक या एक से अधिक और पत्तियाँ आ जाती है)
जड़ गलन रोग के लक्षण (खेत में कहीं-कहीं पर पौधे नीचे से मुरझाने शुरू होते हैं)	जड़ गलन रोग के लक्षण (अंत में पूरा पौधा सूख जाता है)
टिंडा गलन रोग की अलग-अलग अवस्थाएं	पैराविल्ट की अवस्थाएं (शुरुआती अवस्था में पौधे मुरझाने शुरू होंगे तथा अंत में पूरा खेत सूख जाएगा)

मैग्नीशियम की कमी के लक्षण (पत्ते बीच में से बैंगनी रंग के होने शुरू हो जाते हैं)	नाइट्रोजन की कमी के लक्षण (पत्ते हल्के रंग के होकर पीले होने शुरू हो जाते हैं)

अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित नंबरों पर संपर्क करें

8002398139 7015105638 9812700110 9416530089 9041126105 9992911570 9466812467 8901047834

कपास अनुभाग

चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्विद्यालय हिसार